



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 132]

नई दिल्ली, बुधस्पातिवार, जून 10, 1999/ज्येष्ठ 20, 1921

No. 132]

NEW DELHI, THURSDAY, JUNE 10, 1999/JYAISTHA 20, 1921

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 9 जून, 1999

विषय :—रूस से पॉलीटेट्राफ्लूरोएथलीन के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जाँच—आरंभिक निष्कर्ष।

24/1/98/डीजीएडी.—कस्टम टैरिफ अधिनियम, 1975 और उसकी कस्टम टैरिफ  
§ पाटन वस्तुओं पर लगाए गए पाटनरोधी सीमाशुल्क की पहचान, आकलन एवं संग्रहण तथा  
क्षति निर्धारण § नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :-

क. पदति

1. जाँच के लिए निम्नलिखित पदति का पालन किया गया है :-

i § नामनिर्दिष्ट प्राधिकारी § जिसे इसमें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है § ने उक्त  
नियमों के अधीन, मैसर्स हिन्दुस्तान फ्लूरोकार्बन्स लिमिटेड, हैदराबाद से एक  
लिखित याचिका प्राप्त की है जिसमें रूसी मूल के या ब्रह्म से निर्यात किये गए  
पॉलीटेट्राफ्लूरोएथलीन § पीटीएफ ई § के पाटन का आरोप लगाया गया है ।

ii § याचिका की आरंभिक जाँच से कतिपय त्रुटियों का पता लगा जिन्हें तुरंत दूर कर  
में ठीक कर दिया गया है । इसके बाद याचिका को सही दस्तखत माना गया  
है ।

- i ii § वावी वर प्रस्तुत किये गए पर्याप्त सबूतों के आधार पर प्राधिकारी ने रूसी मूल के या वहां से निर्यातित पीटिपई के आरोपित फटित आयातों की जाँच आरंभ करने का निर्णय किया । प्राधिकारी ने नियमावली के उपनियम 5 § 5 § के अनुसार जाँच की कार्यवाही शुरू करने से पहले, फटन के आरोप के प्राप्त होने की सूचना विषयगत देश के दूतावास को दी ।
- 1 v § प्राधिकारी ने सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 39, शीर्ष संख्या 3904-61 के अन्तर्गत वर्गीकृत डिटिपई के आयातों के संबंध में फटनवैधी जाँच आरंभ करते हुए एक सार्वजनिक सूचना 22 जनवरी, 1999 को भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित की ।
- v § प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति उन सभी ज्ञात निर्यातकों § जिनके ब्यौरे वावी वर और भारत में रूस के दूतावास वर उपलब्ध करवा दिए गए थे § तथा उद्योग संघों को भेजी और उन्हें पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया ।
- vi § प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति पीटिपई के ज्ञात आयातकों (जिनका विवरण वावी वर उपलब्ध करवाया गया था §) को भेजी और उनसे पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर विस्तृत विवरण उपलब्ध कराने का अनुरोध किया ।
- vii § केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमाशुल्क बोर्ड § सीबीईसी § से पीटिपई के आयात का विस्तृत विवरण उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था ।
- viii § प्राधिकारी ने पूर्वोक्त नियम 6 § 3 § के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और विषयगत देश के दूतावास को याचिका की प्रतियाँ उपलब्ध कराई ।
- ix § प्राधिकारी ने नियम 6 § 4 § के अनुसार में अपेक्षित जानकारी प्राप्त करने के लिए रूस के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को एक प्रश्नावली भेजी :

0 मैसर्स हैलोमिन ज्वॉलेंट स्वीक कम्पनी,

यू आई, लासविस-क्या, 98

पर्म

रूसी फेडरेशन 614113

निर्यातक ने निश्चित प्रपत्र में प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया । तथापि, उन्होंने प्राधिकारी को 1 अप्रैल, 1999 को एक पत्र लिखा है जिसमें उन्होंने वर्तमान जाँच में भाग लेने की अपनी अनिच्छा जट्टिर की है ।

- ×i] नियम 6 §2§ के अनुसार में, जाँच आरंभ होने की सूचना देते हुए रूसी फेडरेशन के दूतावास से अनुरोध किया गया था कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर निश्चित समय में देने के लिए कहें । निर्यातक को भेजे गए पत्र, यथिका और प्रश्नावली की एक प्रति एवं निर्यातक का नाम और पता भी दूतावास को भेजी गयी थी ।
- ×i] पी वी एफ ई के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को, नियम 6 §4§ के अनुसार, आवश्यक सूचना मांगते हुए एक प्रश्नावली भेजी गयी थी :-
- 0 मैसर्स यू. गोयनका पंड संस लिमिटेड  
मुम्बई
- 0 मैसर्स प्रगति इंटरनेशनल  
नई दिल्ली
- 0 मैसर्स वैनस इन्सुलेशनस  
नई दिल्ली
- 0 मैसर्स मैकेनिकल पैकिंग इंडस्ट्रीज लिमिटेड  
मुम्बई
- 0 मैसर्स माधव फ़लीमर्स  
पुणे
- 0 मैसर्स वैपफ ई कोटिंग इंडस्ट्रीज  
अहमदाबाद

- 0 मैसर्स प्रगति प्लास्टिक प्राइवेट लिमिटेड  
नई दिल्ली
- 0 ऑटोमेट इंडस्ट्रीज  
अहमदाबाद
- 0 मैसर्स डिप-फ्लोन इंजीनियरिंग कम्पनी  
अहमदाबाद
- 0 प्लास्टिक्स प्रोडक्ट्स इंजीनियरिंग कम्पनी,  
नरैल
- 0 मैसर्स कोरोसियन इंजीनियर्स  
अहमदाबाद

निम्नलिखित वर उत्तर दिए गए हैं :-

- 0 ऑटोमेट इंडस्ट्रीज
- 0 मन्दिपल्लीमर्स
- 0 डिप-फ्लोन इंजीनियरिंग एंड कम्पनी
- 0 प्लास्टिक्स प्रोडक्ट्स इंजीनियरिंग कम्पनी
- 0 एक उत्तर तारीख 31 मार्च, 1999 गरी एसोसिएट्स प्राइवेट लिमिटेड से प्राप्त हुआ था जो भारत में 1966 से पि ठे पफ ई अस्तर वाले तारों और केबलों के अग्रणी उत्पादक होने का दावा करते हैं ।

0 मैकेनिकल पैकिंग इंडस्ट्रीज लिमिटेड

- xii. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किये गए सक्षमों के अ-गोपनीय रूप एक सार्वजनिक फाईल के रूप में उपलब्ध करण और हितबद्ध पार्टियों द्वारा निरीक्षण के लिए फाईल को सुला रखा ।
- xiii. यह पता लगाने के लिए कि पाटनमार्जिन से कम का पाटनवैधी सीमाशुल्क स्वदेशी उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा, उत्पादन की अधिकतम लागत एवं सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर भारत में विद्यमान माल को बनाने और बेचने की लागत का हिसाब लगाने के लिए लागत जाँच की गयी थी ।
- xiv. ~~\*\*\*~~ इस अधिसूचना में यह चिन्ह एक हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर दी गयी सूचना का घोटक है और उसे प्राधिकारी द्वारा नियमों के अनुसार ऐसा माना गया है ।
- xv. प्राधिकारी ने वादी के परिसर पर स्थल सत्यापन किया है ।
- vi. जाँच 1 अप्रैल, 1997 से 30 जून, 1998 §15 महीने की अवधि के लिए की गयी थी ।

स. वादी के विचार

2. वादी ने अपनी याचिका और अपने बाव के अभिवेदनों में निम्नलिखित प्रमुख मुद्दे उठाए हैं :-

- पीविपफई एक इंजीनियरिंग पॉलीमर है जिसकी बेजोड़ विशेषताएँ हैं और इस सामग्री का कोई विकल्प नहीं है । यह मोटे तौर पर बानेवार बूर्ण §बानेवार ग्रेड या सस्पेंशन ग्रेड §तथा जलीय पैलाय §या इमूल्सियन ग्रेड § में वर्गीकृत है । पीविपफई के उत्पादन के लिए मुख्य कच्चा माल, पपचपफ और क्लोरोफार्म हैं । पीविपफई के उत्पादन के लिए आवश्यक निवेशों का कोई भी भाग आयोजित नहीं है ।

i i} पीठेपफई का विश्वभर में स्त्री पद्धति से वाणिज्यिक उत्पादन किया जाता है, अर्थात् :-  
\*\*\*

यह कहा गया है कि उपरोक्त के अलावा कोई और प्रक्रिया नहीं है जिसके द्वारा पीठेपफई का उत्पादन किया जा सके ।

i i i} मैसर्स पचपफपल, पीठेपफई की विभिन्न ग्रेड्स के उत्पादक हैं । ये नीचे दिए गए के अनुसार हैं :-

{ क } सस्पेंशन ग्रेड्स- पच51ए, पच71, पच81जी, पच5पीएस

{ स } एम्लशीयन ग्रेड्स-पच620, पच630, पच603/1, पच603/2, पच603/3

{ ग } फिल्ट्र ग्रेड्स- ये कार्बन, काँच, ब्राँज, ग्रेफाइट और मैलिबडीनम डार्डस्फाईट के मिश्रण हैं ।

i v} रुसी पफ चार सामग्री की तुलना, बारी के पच51ए तथा पच71ए { दोनों ही सस्पेंशन ग्रेड की श्रेणी में हैं } से की जा सकती है । पच 4, पच51ए और पच71ए उन्हीं प्रयोगों के लिए प्रयोग किये जाते हैं और उत्पादन की बड़ी प्रक्रिया अपनाई जाती है । तथापि, रुसी सामग्री की दीर्घकालिक श्रृंखला और तनन सामर्थ्य बारी द्वारा उत्पादित माल की तुलना में बढ़िया है । पचपफपल ग्रेड्स की तुलना में इसी ग्रेड में प्रदूषण स्तर ऊँचे हैं ।

V} पचपफपल द्वारा सस्पेंशन और एमल्शन पीठेपफई { बानेदार और जल में विलीय ग्रेड्स } का उत्पादन 80:20 के अनुपात में हैं जो देश की कुल मात्रिक आवश्यकता को पूरा करता है ।

Vi} पचपफपल द्वारा अपनाई गयी टेक्नोलॉजी इस क्षेत्र में विश्व के अग्रणी में से एक, अर्थात् मैसर्स पठेकैम, फ्रांस से प्राप्त की गयी है । यह एक उन्नत टेक्नोलॉजी है और विश्व में केवल 6 बहुरष्ट्यों को उपलब्ध है ।

- Vii) विश्व के अग्रणियों द्वारा अपनाई गयी पॉलिमराइजेशन टेक्नोलॉजी "फ्री रेडिकल पॉलिमराइजेशन" है। मैसर्स एचएफएल द्वारा अपनाई गयी यह टेक्नोलॉजी, वर्षों के अनुसंधान और विकास से प्राप्त सर्वोत्तम परिणाम देती है। रूसियों द्वारा अपनाई गयी टेक्नोलॉजी सदा एडीशन पॉलिमराइजेशन समझी जाती है जो अंतिम उत्पाद को, रूस में प्रयोग की जाने वाली अपर्याप्त टेक्नोलॉजी के कारण, क्वालिटी की दृष्टि से मुक्त रेडिकल पॉलिमराइजेशन उत्पाद से तुलनीय नहीं बनाती।
- Viii) उच्च क्वालिटी निष्पादन पुर्जों, तारों, केबलों, कोटिंग आदि उत्पादित करने के लिए सामग्री की क्वालिटी का अत्यंत महत्व है। यदि कच्चा माल इटाली श्रेणी का है तो संबंधित पुर्जे अपने-अपने उपयोगों में असफल रहेंगे। तब पीटीएफई के वास्तविक लाभों को एक तरफ छोड़कर वैकल्पिक सामग्रियों का विकास किया जाएगा।
- ix) रूसी माल की क्वालिटी बहुत इटाली है। अतः खदी द्वारा विकसित किये गए बाजार धीरे-धीरे वैकल्पिक सामग्री की ओर जा रहे हैं।
- x) एचएफएल ने अपना वार्षिक उत्पादन 1988 में आरंभ किया जब पीटीएफई की मांग केवल 150 मीट्रिक टन की थी और संयंत्र की क्षमता 500 टन प्रतिवर्ष की थी। भारत में पीटीएफई के उपयोग को बढ़ाने के लिए एचएफएल ने काफी निवेश किया है। जबकि उनके इन प्रयासों के परिणाम प्राप्त हो रहे थे, पिछले तीन वर्षों के दौरान देश में रूसी सामग्री के पाटन ने एचएफएल के निष्पादन पर विपरीत प्रभाव डाला है।
- xi) रूस ने, चाहे व्यापार माध्यमों से या सीधे ही, केवल दानेदार चूर्ण ग्रेड्स की ही सप्लाई की है और एमल्शन/जलीय बुलन ग्रेड्स की सप्लाई नहीं की है।
- xii) एचएफएल द्वारा उत्पादित पीटीएफई के ग्रेड्स की तुलना में रूसी सामग्री की क्वालिटी, उनके द्वारा प्रयुक्त अपर्याप्त टेक्नोलॉजी और कच्चे माल के उनके विशिष्ट उपयोग में अकुशलता के कारण, इटाली है। अतः उनके संसाधन की अकुशलता, उनके उत्पादन की उच्चतर लागत में परिलक्षित होती है। तथापि, वे हताशा मूल्यों पर लगातार भित्री करते हैं जिससे बाजार की स्थिरता पूर्णतया नष्ट हो जाती है।

- xiii} पीविएफई के आयतों में भारी वृद्धि हुई है । एचएफएल अपनी बाजार हिस्सेदारी तेजी से खोतारहा है और इसे अपनी सामग्री, अत्यंतित रेजिन के लौड्ड मूल्य से तुलनीय मूल्य पर बेचनी पड़ रही है । प्रतिस्पद्धी मूल्यों पर सामग्री देते हुए एचएफएल को अपनी रेजिन भारी हानि पर बेचनी पड़ी है ।
- xiv} निक्षिपों में गिरवट के कारण एचएफएल की क्षमता उपयोगिता भी गिरतीरही है।
- xv} एचएफएल ग्राहकों को सप्लाई, फैंक्टरी-एतर आधार पर की जाती है । सभी हेडलिंग लागत {टेक्नीकल सेवारै} ग्राहक द्वारा वहन की जाती हैं ।
- xvi} एचएफएल सामग्री की पैकिंग फाईबर ड्रमों में की जाती है जिनमें पलछीपी की दोहरी लाइनिंग लगी रहती है ।
- xvii} मैसर्स एचएफएल हैदराबाद , भारत में इस रेजिन के एकमात्र उत्पादक हैं । एचएफएल की संयंत्र क्षमता विश्व में सबसे छोटी है और उसे डू पैंट, अमेरिका/जापान और धीपओ टेकमाश-एक्सपोर्ट, मास्को जैसे देत्यों से प्रतिस्पद्धा करनी पड़ती है जिनकी अपनी-अपनी संयंत्र क्षमतारै 10000 मी.टन प्रतिवर्ष की हैं
- xviii} वादी द्वारा ,उपयोग निक्स और ग्राहक सेवा में किये गए निवेश की मात्रा रु . 10 करोड़ है । इस बात का श्रेय वादी को जाता है कि 1991 के पीविएफई के 300 मी.टन/वर्षिक का बाजार, उनके निष्पान एवं उपयोग निक्स प्रयासों के कारण आज के 800 मी.टन की मांग वाले बाजार में निक्सित हो गया है । भारत से बाहर के सप्लायरों को अपनी सामग्री भारतीय भूमि में सप्लाई करने तथा वादी से बाजार छिन लेने का प्रमुख कारण रहा है ।
- xix} पीविएफई के प्रयोग के वादी द्वारा निक्सित नये क्षेत्रों में निम्नलिखित शामिल हैं:-
- {क} उच्च वॉल्टेज सर्किट ब्रेक्स के लिए पीविएफई नोजल हैड्स का स्वदेशीकरण;
  - {ख} सिंचाई के प्रयोजनों के लिए हरे पीविएफई पट्टियों का निक्स;
  - {ग} क्षारक प्रव्यों की पीपिंग के लिए पीविएफई चढ़े रबड़ के डायफार्मों का निक्स;
  - {घ} प्रिसाबलों के हिस्से;
  - {ङ} पीविएफई पम्प का निक्स;
  - {च} बैटरीयों के लिए पीविएफई अस्तन का निक्स;
  - {छ} पीविएफई उत्कीर्णित टेपों का निक्स;



§ xx § इसी सप्लाई के दूर पीपेपई के पाटन के कारण पड़े मूल्य संबंधी दबाव की वजह से बाकी को अपने मूल्यों को आयोजित पीपेपई के लैडिड मूल्य के बराबर लाना पड़ा , जिसके कारण वह जाँच की अवधि के बाद अनुसंधान एवं विकास तथा उपयोग विकास में और आगे निवेश के प्रयोजन के लिए अधिशेष निधि नहीं बना सका ।

ग. आयतकों, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

3. आयतकों के विचार

§ क § आयेमैट इंडस्ट्रीज

i § पीपेपई टेफ्लोन मदों के उत्पादकों के रूप में, इससे, एचएएल, कोएआरसी, एनवैपिसी, ओएनजीसी, बेपचईएल तथा खा संगठनों जैसे खरीददारों को सप्लाई की जाती हैं जो केवल क्वालिटी उत्पादों की डिलीवरी ही लेते हैं । उत्पाद की क्वालिटी को सुनिश्चित करने के लिए कच्चे माल का शुद्ध होना जरूरी है । कच्चा माल, अर्थात् पीपेपई की खरीद बाढ़ी से की गयी थी और यह मिलसिला बारह वर्षों तक चलता रहा । तथापि, अपने उत्पाद की घटिया क्वालिटी के कारण उन्होंने रूस से आयत शुरू किये जो न केवल क्वालिटी की दृष्टि से संतोषजनक थे, बल्कि मूल्यों की दृष्टि से भी सस्ते थे ।

ii § खरीददारों के साथ क्वालिटी संबंधी समस्याएँ नहीं आयीं, क्योंकि आयोजित कच्चे माल का प्रयोग किया जा रहा था जिसकी समय पर डिलीवरी होती है ।

iii § बाकी, जोकि पीपेपई का एक मात्र उत्पादक है, उच्च मूल्य पर घटिया क्वालिटी की सामग्री सप्लाई करता है । यदि पाटनवैधी सीमाशुल्क लगाया जाता है तो उससे, आयोजित पीपेपई का प्रयोग करते हुए क्वालिटी के तैयार उत्पादों को सप्लाई करने वाली कंपनियों को हानि होगी ।

(ख) मै0 माघ पॉलीमर्स

इन्होंने जाँच की अवधि में या किसी और समय भी रुसी मूल के या वहाँ से निर्यातित पी टी स्क ई का आयात नहीं किया है।

(ग) गर्ग एसोसिएट्स

- i) ग्रुप कम्पनियों में से दो, गर्ग एसोसिएट्स प्रा० लि० और ध्रुव इलैक्ट्रानिक्स प्रा० लि०, पी आई डब्ल्यू सी ( पी टी स्क ई स्तर वाले तार और केबल) एवं पी टी स्क ई स्लीव्स / ट्यूबों के डिजाइन तथा उत्पादन में संलग्न हैं और अधिकतर जापान से फाइन पाउडर पी टी एफ ई की भारी मात्राओं का प्रापण करते हैं।
- ii) गर्ग एसोसिएट्स प्रा० लि० ही शायद भारत के एकमात्र निर्यातक है जो पश्चिमी योरोप, ब्रिटेन, कनाडा और न्यूजीलैण्ड के विकसित बाजारों को उच्च मूल्य संवर्द्धन पर पी आई डब्ल्यू सी का निर्यात कर रहे हैं। ध्रुव इलैक्ट्रानिक्स प्रा० लि० भारत में व्यावसायिक औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति के अलावा स्वदेशी बाजार की, विशेष रूप से रक्षा इलैक्ट्रानिक्स और एरो- स्पेस, पूर्ति कर रहे हैं।
- iii) पी टी एफ ई, विभिन्न उपयोगों के साथ बहुप्रयोगी (वर्सटाइल) प्लास्टिक है जिसमें भारी मात्रा की दृष्टि से सबसे सामान्य क्षेत्र मोल्डिंग और लाइनिंग के क्षेत्र हैं। पी टी एफ ई, फाइन पाउडर रेजिन को, बहुत पतला टेप बना कर, टेप को सिल्वर या निकल प्लेटिड कॉपर चालकों ( कंडक्टर्स) पर लपेट कर और तार बनाने के लिए उच्च तापमान पर फ्यूजिंग कर प्रयोग किया जाता है। स्लीव या ट्यूबिंग्स बनाने लिए भी ऐसी ही प्रक्रिया अपनाई जाती है।
- iv) चूंकि विभिन्न उपयोगों के लिए प्रयुक्त पी टी एफ ई की किस्मों के मूल्य में भारी अंतर होता है, अतः पाटन के लिए जाँच में विभिन्न ग्रेड्स पर भी विचार करना चाहिए।
- v) वादी के उद्देश्य संदेहास्पद हैं। उनके उत्पादों के मूल्य कभी भी, उत्पादन की लागत से संबंधित व्यावसायिक सोच-विचार पर आधारित नहीं रहे। ना ही पी टी एफ ई की

क्यालिटी या इसके किसी माप की सततता की उन्हें पर्याह रही है। एच एफ एल द्वारा, वर्तमान आयात सीमा-शुल्क ढाँचे एवं डालर की विनिमय दर को हिसाब में लेते हुए, आयातित पी टी एफ ई की लैण्डिङ लागत के आधार पर विगत में मूल्यों में अधिकतर वृद्धि, मनमर्जी से की जाती रही है।

- vi) इस सत्तरदाता को, यादी द्वारा सप्लाई किए गए पी टी एफ ई की घटिया क्यालिटी के लिए क्षतिपूर्ति की माँग करनी पड़ी। जब एच एफ एल क्यालिटी को सुधारने के उनके प्रयासों के कोई संतोषप्रद परिणाम नहीं निकले तो जुलाई, 1998 से यादी से और आगे की खरीदें रोक दी गई थीं।
- vii) प्रतिवादी अब नितान्त रूप से आयातित सामग्री पर निर्भर है।
- viii) जबकि मै0 एच एफ एल के पास कार्यों (ऑपरेशन्स) की लागत घटाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं है, रुसी उत्पादक को उसकी नीची उत्पादक लागत के लिए दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए।

(घ) डिप-फ्लोन इंजीनियरिंग एण्ड कम्पनी

- i) इस सत्तरदाता का कहना है कि उन्होंने जाँच की अवधि के दौरान रुस से पी टी एफ ई का आयात नहीं किया है।
- ii) पी टी एफ ई के एक संसाधक होने के नाते वे आयातित पी टी एफ ई और एच एफ एल द्वारा उत्पादित के बीच खुली प्रतियोगिता चाहेंगे।
- iii) उन्हें आयातों का सहारा लेना पड़ा क्योंकि एच एफ एल द्वारा सप्लाई की गई रेजिन की क्यालिटी विभिन्न संसाधनों के लिए अनुपयुक्त थी और यादी, सनकी आवश्यकता को समय पर पूरा करने में असमर्थ था।
- iv) यह महसूस किया जाता है कि भूमण्डलीकरण और परिणामतः प्रतिस्पर्धी मूल्य-निर्धारण और उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध विकल्पों की अनेक किस्मों को देखते हुए, पाटन-रोधी सीमा-शुल्क लगाना या जाँचाधीन उत्पाद के आयातों को प्रतिबंधित करना प्रति-उत्पादक हो जाएगा।

### ख) प्लास्टिक प्रोडक्ट्स इंजीनियरिंग कम्पनी

- i) इस उत्तरदाता ने जाँच अवधि के दौरान मैसर्स हेलोजिन ज्वाइण्ट स्टॉक कम्पनी से पी टी एफ ई का आयात नहीं किया।
- ii) सप्लायर की दृष्टि से, पी टी एफ ई के एक मात्र उत्पादक होने के नाते मैसर्स एच एफ एल को, सनके दावे को मान कर और पाटन रोधी सीमा-शुल्क लगा कर एक एकाधिकारी का दर्जा नहीं पाने देना चाहिए।
- iii) यादी, पी टी एफ ई के सभी ग्रेड्स का उत्पादन नहीं करता है, अतः आयातों को प्रतिबंधित करने के उपाय प्रति - उत्पादक होंगे।

### घ) मैकेनिकल पैकिंग इण्डस्ट्रीज लि०

- i) अन्त्य प्रयोग के लिए क्वालिटी, उपलब्धता और उपयुक्तता के महत्व देते हुए, भारतीय सप्लायरों के हित में सरकार ने, पी टी एफ ई के मुक्त आयात को अनुमत कर दिया है। खास-खास उपयोग के क्षेत्रों / अन्य प्रयोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में उपलब्ध पी टी एफ ई के विभिन्न ग्रेड्स देने की स्थिति में यादी नहीं है। यद्यपि अधिकतम आवश्यकताओं की पूर्ति का स्रोत मै० एच एफ एल है, ऐसा अक्सर पाया जाता है कि सनके द्वारा सप्लाय किए गए रेजिन की क्वालिटी में समनुरूपता नहीं है।
- ii) यह उत्तरदाता स्वदेशी उद्योग और साथ ही निर्यात बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करता है। निर्यात के प्रयोजनों के लिए क्वालिटी की समनुरूपता आवश्यक है जिसके कारण पी टी एफ ई रेजिन के आयात करने पड़ते हैं।
- iii) विभिन्न स्रोतों से पी टी एफ ई रेजिन के आयातों की लैण्डिङ लागत, मै० एच एफ एल लि० से खरीद की लागत से प्रायः अधिक ही रही है। निर्यात बाजार और साथ ही अन्त्य उपयोगों हेतु क्वालिटी वाले पहलु को ध्यान में रखते हुए यह बात दोहराई जाती है कि ऐसे मंहगे आयात आवश्यक हैं।

- (M) भारतीय बाजार में रुसी पी टी एफ ई का बड़े पैमाने पर पाटन नहीं है, अतः पी टी एफ ई रेजिन पर पाटन-रोधी सीमा-शुल्क लगाने से, गैर प्रतिस्पर्द्धी मूल्य और अस्वीकार्य क्वालिटी के कारण निर्यातों को कम करने से विदेशी मुद्रा आय पर वितरीत प्रभाव पड़ सकता है।

#### 4. निर्यातकों के विचार

##### हैलेजिन ज्वाइंट स्टॉक कम्पनी

इस निर्यातक ने निर्धारित प्रश्नावली के अनुसार और अनुमत समय सीमा के भीतर, सूचना देने के प्राधिकारी के अनुरोध का उत्तर नहीं दिया है। तथापि, प्राधिकारी को लिखे तारीख 1/4/89 के अपने पत्र में उन्होंने निम्नलिखित बिन्दु उठाए हैं :-

- i) यादी के तर्क गलत और निराधार है।
- ii) यादी ने गलती से यह निष्कर्ष निकाला है कि रुस में पी टी एफ ई का सामान्य मूल्य, भारत को किए गए निर्यात के मूल्य से बहुत ऊंचा है।
- iii) यादी का यह कहना कि रुसी उत्पादक वेतन, मजदूरी और वाणिज्यिक हितों के खर्च 'स्टेट' से लेते हैं, पूर्णतः वैसे ही निराधार है जैसा कि उनका यह कहना कि रुसी उपक्रमों में कार्मिक, भारत की तुलना में "आधे से कम" हैं।
- iv) यह कि रुस में पी टी एफ ई का उत्पादक, जे एस सी हैलेजिन है, तथ्यतः सही नहीं है। भारत की उनकी पूर्तियों की मात्रा अनियमित और नगण्य रही है।
- v) एच एफ एल के लिए वी ए ओ टैकमाश-एक्सपोर्ट (मास्को) से प्रतिस्पर्द्धा करना अनावश्यक है क्योंकि दूसरी तो एक व्यापारिक संस्था है जिससे कभी भी पी टी एफ ई का उत्पादन नहीं किया।

- vi) मूल्यों की तुलना के लिए, वादी ने पी टी एफ ई के खूपोण्ट (अमरीका) एवं डाइकिन (जापान) जैसे सबसे बड़े उत्पादकों को चुना है किन्तु ये उत्पादक पी टी एफ ई रेजिन के मूल्य में तकनीकी सेवा (हैण्डलिंग खर्च) के खर्च को भी और शामिल करते हैं।
- vii) उत्पादक के लिए प्रयुक्त टेक्नॉलोजी एवं पाश्च्य-शोधन या और आगे संसाधन के आधार पर, पी टी एफ ई के मूल्यों में काफी भिन्नता हो सकती है। मूल्यों की तुलना के लिए खूपोण्ट (अमरीका) के मोल्लिंग पी टी एफ ई धूर्ण और फ्लूरोप्लास्ट-4 वी एन का हवाला देना सही नहीं है क्योंकि कणों के आकार के कारण पी टी एफ ई के ये ग्रेड्स भिन्न हो सकते हैं और आगे संसाधित होने के बाद इनके उपयोग भिन्न हो जाते हैं जिसके फलस्वरूप उनके मूल्य भी भिन्न-भिन्न होते हैं।
- viii) पी टी एफ ई के मूल्य, प्रयुक्त पैकेजिंग के प्रकार पर भी निर्भर होते हैं। खूपोण्ट का मोल्लिंग धूर्ण, मेटल कार्डबोर्ड या पॉलीस्टरीन ड्रमों में पैक होता है जबकि फ्लूरोप्लास्ट-4 पी एन (जे एस सी हेलाजिन) कागज के बोरो में पैक होता है।
- ix) ऊपर दिए गए कारणों को देखते हुए एवं प्रस्तुत किए गए कागजात की जानकारी प्राप्त कर लेने पर, यह निर्यातक वर्तमान जाँच में भाग लेना आवश्यक नहीं समझता।

#### घ. उठाए गए मुद्दों की जाँच

5. वादी एवं निर्यातकों द्वारा किए गए अभिवेदनों की जाँच कर ली गई है उन पर इसमें इसके आगे उचित स्थानों पर विचार किया गया है।

#### ङ. जाँचाधीन उत्पाद

6. वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद, सस्पेंशन और एमल्शन ग्रेड्स में पॉलीटैट्रा फ्लूरोएथीलोन (पी टी एफ ई) है।

पी टी एफ ई एक इंजीनियरिंग थर्मोप्लास्टिक है जिसकी असाधारण गुण - धर्मिताएँ हैं जैसे रसायन निष्क्रियता, घर्षण की निम्न सह-योग्यता (को-एफीशेंट), ताप-रोधिता, सर्वोत्तम विद्युत अस्तरण विशेषताएँ, अ-विषाक्तता, अ-ज्वलनशीलता और मौसम के प्रभावों के प्रति रोधकता। अपनी इन विशेषताओं के कारण पी टी एफ ई का रसायनिक, मैकेनिकल, विद्युत एवं इलैक्ट्रानिक्स उद्योगों में अनेक उपयोगों में प्रयोग किया जाता है।

मोल्डिंग और अस्तरण के क्षेत्रों में सर्वाधिक आम होने के कारण पी टी एफ ई के विभिन्न प्रयोग हैं। मैकेनिकल उद्योग में पी टी एफ ई का उपयोग बीयरिंग्स, कम्प्रेशन रिंग्स, साइड ब्लॉक्स ( बड़ी धातुगत संरचनाओं जैसे पुल, पाइपलाइनों, ताप-विनिमयकों, कैलिज टंकियों, आदि के विस्तारण में प्रयुक्त ) रोटेटिंग पर पम्पों के स्टफिंग बाक्सिंग या आल्टरनेटिंग शेफ्ट्स, पीडकों, आटोक्लेव वाल्व्स आदि के उत्पादन हेतु किया जाता है। पी टी एफ ई का प्रयोग अनसिन्टर्ड टेप के उत्पादन एवं छपाई एवं टैक्सटाइल उद्योग में सतहों को चिपकन रोधी बनाने के लिए रोलर्स की कोटिंग हेतु किया जाता है।

विद्युत उद्योग में, निस्सरण द्वारा पी टी एफ ई अस्तरित तार और टेप लिपटे केबल सूक्ष्म उद्योग में प्रयोग किए जा रहे हैं। पी टी एफ ई का और सामान्य प्रयोग विमानन, इलैक्ट्रानिक कम्प्यूटर्स राडार आदि में किया जा रहा है। यह, योजक पुर्जे, को-एक्सिल प्लग्स, इलैक्ट्रानिक ट्यूबों और एरियलों के लिए सपोर्ट्स, उच्च तनन संचालकों के लिए क्रास-बार, अस्तरण हिस्से आदि बनाने के लिए प्रायः सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। अब सीलें और योजन ( ज्वाइंट्स ) रसायन उद्योग में पी टी एफ ई के सर्वाधिक सामान्य क्षेत्रों में से एक है। इसके अलावा पाइप लाइनों, वाल्वों, पम्पों आदि के लिए भी पी टी एफ ई समान रूप से प्रभावी है।

पी टी एफ ई कस्टम टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 39, टैरिफ वर्गीकरण, एच एस कोड नं० 3904.61 के अंतर्गत वर्गीकृत है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वर्तमान जाँच के विस्तार पर किसी भी प्रकार से बाध्यकर नहीं है।

### घ. समान वस्तुएं

7. पी टी एफ ई विभिन्न ग्रेड्स में बनता है और बिकता है। तथापि, पी टी एफ ई, जो विश्वभर में एक ही रसायनिक प्रक्रिया से तैयार किया जाता है, के विभिन्न ग्रेड्स के उत्पादन में प्रयुक्त प्रक्रिया, उपकरण या टेक्नॉलाजी में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। पी टी एफ ई के भिन्न-भिन्न ग्रेड्स को प्राप्त करने के लिए, विभिन्न प्रकार की फिनिशिंग क्रियाएँ की जाती हैं जो अधिकतर बैचों में होती हैं। अतः स्वदेशी उद्योग द्वारा और इस जाँच के विषयगत देश में उत्पादित पी टी एफ ई, अपने अनिवार्य भौतिक एवं तकनीकी विशेषताओं में समान हैं।

यह स्थापित करने के लिए कि स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित पी टी एफ ई, रुस से निर्यातित के समान वस्तु है, उसकी विशेषताओं जैसे तकनीकी विनिर्देश, उत्पादन प्रक्रिया, कार्य एवं प्रयोगों तथा टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया गया है। कुछ हितबद्ध पार्टियों ने आयातित पी टी एफ ई और वादी द्वारा उत्पादित पी टी एफ ई की क्वालिटी में अंतर पर भी बल दिया है। तथापि, उत्पाद की उत्पादन प्रक्रिया, उपयोग और समग्र प्रयोग एक समान है। इस जाँच की विषय वस्तु होने के कारण, आयातित उत्पाद एवं वादी द्वारा उत्पादित के बीच बहुत अधिक विनिमेयता है और परिणामतः होने वाली प्रतिस्पर्धा है।

इस बात पर बहस के लिए कोई तर्क नहीं है कि स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित पी टी एफ ई की विशेषताएँ आयातित माल वाली से बहुत निकटता से मिलती हैं और यह वाणिज्यिक एवं तकनीकी, दोनों ही दृष्टियों से विषयगत देश से आयातित पी टी एफ ई का स्थानापन्न है। स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित पी टी एफ ई को नियम 2(डी) के अर्थों में, रुस से निर्यातित उत्पाद के समान वस्तु माना गया है।

### छ. स्वदेशी उद्योग

8. याचिका मै0 हिन्दुस्तान फ्लोरोकार्बन्स लि0, हैदराबाद द्वारा दी गई है कि भारत में इस उत्पाद के एक मात्र उत्पादक होने की स्थिति की पुष्टि, रसायन तथा सर्वरक मंत्रालय ने भी की है। अतः वादी स्वदेशी उद्योग है और उसके पास नियमों के अंतर्गत वर्तमान याचिकादायर करने का अपेक्षित आधार है।



ज . पाठन

9. धारा 9 ए ( 1 ) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :

समान वस्तु के लिए व्यापार के सामान्य रूप में तुलनीय मूल्य, जब वह वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के निमित्त हो, जिसका निर्धारण उप धारा ( 6 ) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया गया हो : या

1) जब व्यापार के सामान्य रूप में निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में समान वस्तु की कोई बिक्री न हो या जब निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में, विशेष बाजार स्थिति या बिक्री की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्री से उचित तुलना न की जा सके, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई होगा :

क) समान वस्तु का तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य, जब उसका निर्यात, निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी अन्यदेश से किया जाए, जिसका निर्धारण उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया गया हो, या

ख) मूलता के देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत जिसमें प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागत तथा लाभ के लिए उपयुक्त राशि जोड़ी गई हो, जिसका निर्धारण उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाए :

किन्तु यदि वस्तु का आयात, मूलता के देश से इतर किसी देश से किया गया हो तथा जहाँ वस्तु को निर्यात वाले देश से होकर केवल यानान्तरित किया गया हो या ऐसी वस्तु का निर्यात वाले देश में उत्पादन नहीं किया जाता हो या निर्यात वाले देश में कोई भी तुलनात्मक कीमत नहीं हो, तब सामान्य मूल्य का निर्धारण, मूलता के देश में इसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

10. ऊपर दी गई धारा के अनुसार प्राधिकारी ने विषयगत देश के ज्ञात निर्यातक को एक प्रश्नावली भेजी। तथापि, निर्यातक ने प्रश्नावली के अनुसार सूचना देने के अनुरोध का उत्तर नहीं दिया, किन्तु प्राधिकारी को लिखे अपने 1/4/89 के पत्र में कुछ मुद्दे सटाए। उन्होंने इस जाँच में भाग लेने की अपनी अनिच्छा भी जाहिर की। अतः सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य के संबंध में निर्यातक द्वारा कोई दावे नहीं किए गए हैं। अतः प्राधिकारी को यादी द्वारा दिए गए और सरकारी सांख्यिकी में उपलब्ध के अनुसार, सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य के संबंध में निर्मित मूल्य तथा सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर भरोसा करना पड़ा है।

### इ. निर्मित मूल्य एवं उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य तथा निर्यात मूल्य की प्राधिकारी द्वारा जाँच

11. प्राधिकारी का मानना है कि पी टी एफ ई के विभिन्न ग्रेड्स में लागत की दृष्टि से कोई बड़ा अंतर नहीं है और ये उसी सीमा के हैं। यादी द्वारा यह कहा गया है कि दानेदार ग्रेड्स को सुखाना पड़ता है और सुखाने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इस अतिरिक्त ऊर्जा की लागत कमोबेश, जलीयफैक्टव एमल्शन ग्रेड्स के लिए अतिरिक्त योज्य लागत के बराबर है। अतः दानेदार और एमल्शन ग्रेड्स की अवकल उत्पादन लागत में आंशिक अंतर है और एक समान मानी जा सकती है। इसलिए प्राधिकारी ने इस जाँच के लिए विचाराधीन उत्पाद के रूप में वर्णित सभी ग्रेड्स को समूहित कर दिया है।

#### (i) सामान्य मूल्य

प्राधिकारी ने पाया है कि रूस के निर्यातक ने निर्धारित प्रपत्र में प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है और सामान्य मूल्य, निर्यात मूल्य एवं पाटन मार्जिन संबंधी सूचना भी नहीं दी है।

विनिर्दिष्ट समय सीमा के बाद प्राधिकारी को प्राप्त पत्र में उन्होंने कुछ सामान्य मुद्दे उठाए हैं और रुस में सामान्य मूल्य के संबंध में वादी के विचारों को आधारहीन एवं गलत कहा है। प्राधिकारी द्वारा यह देखा गया है कि उन्होंने प्रश्नावली का उत्तर देकर खुद अपने ही तर्क को प्रमाणित करने का प्रयास नहीं किया है। बल्कि उन्होंने इस जाँच में भाग लेने में अपनी अनिच्छा जाहिर की है। अतः प्राधिकारी निर्यातक को असहयोगी मानता है और वह सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के अनुसार चला है।

वादी ने आँकड़ों के संग्रहण एवं अमरीका के उद्योगों तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय उत्पादकों से की गई बात-चीत के आधार पर, रुस में उत्पादन की निर्मित लागत का दावा किया है। जबकि निर्यातक ने यह कहते हुए इस आँकड़े का विरोध किया है कि यह केवल मोटे अनुमान पर आधारित है, उन्होंने अपने सामान्य मूल्य का कोई साक्ष्य नहीं दिया है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी, उपलब्ध सूचना के आधार पर निर्मित मूल्य निश्चित करने के लिए बाध्य है। अतः 1 अमरीकी डालर = ₹039.42 की औसत विनिमय दर पर रुस में सामान्य मूल्य अ.डा. xxxx कि.ग्रा. या ₹0 xxx / कि. ग्रा. माना जाता है।

## II) निर्यात मूल्य

13 1% को समुद्री भाड़े, 0.29% को बीमे प्रभार एवं 0.5% की पैकिंग लागत के रूप में शामिल करते हुए, डी जी सी आई एवं आँकड़ों के आधार पर निर्यात मूल्य किया गया है।

## III) पाटन मार्जिन

14. सामान्य मूल्य अ.डा. xxx / कि. ग्रा. तथा फैक्ट्री एतर मूल्य अ.डा. xxxxx / कि. ग्रा. मानते हुए, प्राधिकारी द्वारा निश्चित किया गया पाटन मार्जिन अ.डा. xxx / कि.ग्रा. है (जो निर्यात मूल्य का 4.82% है)।

## अन. क्षति

15. पूर्वोक्त नियम 11, अनुलग्नक-2 के अंतर्गत जब क्षति का निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में स्वदेशी उद्योग को होने वाली क्षति का निर्धारण भी शामिल होगा। ऐसा करते समय सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखा जाएगा, जिनमें शामिल हैं - पाटित आयातों की मात्रा, स्वदेशी बाजार में समान वस्तुओं के मूल्यों पर उनका प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के स्वदेशी उत्पादकों पर ऐसे आयातों का परिणामी प्रभाव। मूल्यों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते हुए इस बात की जाँच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान उत्पाद के मूल्य की तुलना में, पाटित आयातों द्वारा कीमतों में पर्याप्त कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव पर्याप्त मात्रा में मूल्यों को अन्यथा कम करना या मूल्यों में होने वाली वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी बढ़ गए होते।

पूर्वोक्त नियम 11 के अंतर्गत अनुलग्नक II (iii) में और आगे यह भी दिया गया है कि जहाँ एक उत्पाद के एक से अधिक देशों के निर्यात, साथ-साथ पाटन रोधी जाँच के अधीन हों तो प्राधिकारी, ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयित आकलन तभी करेगा जबकि यह निश्चय होता है कि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में स्थापित पाटन - मार्जिन, निर्यात मूल्य के प्रतिशत के रूप में बताया गया और दो प्रतिशत से अधिक है। एवं प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा, समान वस्तु के आयातों का तीन प्रतिशत हो या जहाँ पर देशों का अलग-अलग निर्यात तीन प्रतिशत से कम हो तो आयात, संचयित रूप में समान वस्तु के आयातों के सात प्रतिशत से अधिक हो, और आयातित वस्तु एवं समान स्वदेशी वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की दशाओं के प्रकाश में, आयातों के प्रभाव का संचयित आकलन संचित है।

प्राधिकारी नोट करता है कि पाटन का मार्जिन एवं विषयगत देश से आयातों का परिमाण, ऊपर निर्धारित सीमाओं से अधिक है।

भारत में स्वदेशी उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जाँच करने के लिए प्राधिकारी ने पूर्वोक्त नियमों के अनुलग्नक II (iv) के अनुसार, ऐसे और संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की परिस्थितियों जैसे उत्पादन क्षमता उपयोगिता, बिक्री का परिमाण, स्टॉक, लाभकारिता, शुद्ध बिक्री प्राप्ति, पाटन का परिमाण और मार्जिन आदि को प्रभावित करते हैं।

**(क) आयातों की मात्रा**

16. पी टी एफ ई के कुल निर्यात 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 में ( जून, 1998 तक ) क्रमशः 3,34,920 कि.ग्रा., 3,44,184 कि.ग्रा. और 4,75,528 कि.ग्रा. थे। इस प्रकार वृद्धि 1995-96 के ऊपर, 1996-97 में 2.76% और 1996-97 के ऊपर 1997-98 ( जून, 1998 तक ) में 38% थी। वर्ष 1995-96 के ऊपर 1997-98 में वृद्धि 41.9% थी। इस प्रकार जाँच अवधि के दौरान आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है।

रूस से आयात 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 (जून, 1998 तक ) में क्रमशः 24,130 कि.ग्रा., 7000 कि.ग्रा. तथा 40,665 कि.ग्रा. रहे। आयातों की मात्रा में 1995-96 के ऊपर 1996-97 में 68% तथा 1996-97 के ऊपर 1997-98 में 480% वृद्धि हुई। तथापि, 1995-96 की तुलना में 1996-97 में आयातों में गिरावट आई थी।

अन्य देशों से आयातों की मात्रा 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 ( जून, 1998 तक ) क्रमशः 3,10,780 कि.ग्रा., 3,37,184 कि.ग्रा. तथा 4,34,863 कि.ग्रा. रही थी। कुल आयातों में रूस की हिस्सेदारी 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 में क्रमशः 7.76 %, 2.07% तथा 9.35% रही थी।

17. वादी की उत्पाद क्षमता, वास्तविक उत्पादन एवं क्षमता उपयोग निम्नलिखित के अनुसार रहे :-

<u>वर्ष</u>	<u>क्षमता (मी.टन)</u>	<u>उत्पादन (मी.टन)</u>	<u>क्षमता उपयोग</u>
1995-96	500	385	77
1996-97	500	392	78
1997-98	500	259	52
जाँच अवधि	625	333	53.28

मैसर्स एचएफएल का क्षमता उपयोग 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 में क्रमशः 77 प्रतिशत, 78 प्रतिशत और 52 प्रतिशत एवं जाँच अवधि में 53.28 था। इस प्रकार जाँच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में पिछले वर्ष के 78 प्रतिशत के स्तर को देखते हुए भारी गिरावट आई। क्षमता उपयोग में गिरावट का कारण बिजलीयों में गिरावट बताया गया है। संस्थापित क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है जो उसी स्तर पर बनी रही।

#### § ग § बिजली तथा बाजार हिस्सेदारी

18. यह देखा गया है कि 95-96, 96-97 और 97-98 में पीपेएफई की मांग क्रमशः 746 मीट्रिक टन, 705 मी.टन और 797 मी.टन की थी। कुल मांग में आपूर्तों की हिस्सेदारी 95-96, 96-97 और 97-98 में क्रमशः 44.7 प्रतिशत 48.7 प्रतिशत तथा 59.5 प्रतिशत थी। बादी की हिस्सेदारी 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 55.2 प्रतिशत, 51.2 प्रतिशत तथा 40 प्रतिशत थी। इस प्रकार कुल मांग में आपूर्तों की हिस्सेदारी बढ़ती रही है जबकि भारतीय उद्योग की हिस्सेदारी में गिरावट आती रही है। बादी द्वारा की गयी बिजलीयों की मात्रा 1995-96 के 412 मी.टन से गिरकर 96-97 में 361.00 मी.टन और जाँच अवधि § अप्रैल, 97 से जून, 98 § के दौरान 321.88 गिर गयी। प्रति किलो ग्राम रुपये में बिजली मूल्य 95-96, 96-97 और 97-98 में क्रमशः xxx, xxx तथा xxx रहे। जाँच अवधि के दौरान उत्पादन की लागत से नीचे के मूल्य पर पीपेएफई की बिजली के कारण बादी को लाभ की भारी हानि हुई।

#### घ. अंतिम स्टॉक

19. यह देखा गया है कि बादी का अंतिम स्टॉक 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 54 मी.टन, 85 मी.टन तथा 69 मी.टन था। अंतिम स्टॉक में 95-96 के ऊपर 96-97 में 36 प्रतिशत तथा 95-96 के ऊपर 97-98 में 21 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जाँच अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में अंतिम स्टॉक की मात्रा में कमी आई, किन्तु यह अधिक थी रहा।

### § ड. § मूल्यों में अंडरकॉटिंग तथा मूल्य अवसादन

---

20. वादी का कहना है कि विषयगत देश से किये गए आयात, स्वदेशी उत्पादक द्वारा बेचे जा रहे समान वस्तु के मूल्यों की अंडरकॉटिंग कर रहे हैं। सरकारी ऑफिसों से यह देखा गया है कि भाड़े, बीमे और पैकिंग प्रभारों के समायोजनों के बाद रूसी पीटैपई का मूल्य रु. \*\*\*/किलोग्राम § एफ ओबी § या अ.डा. \*\*\* था। यह रूस में उत्पादन के निर्मित मूल्य से कम है जो रु. \*\*\* कि.ग्रा. या अ.डा. \*\*\* कि.ग्रा. लगाया गया है। यह मूल्य 1995-96, 96-97 और जाँच अवधि के लिए क्रमशः रु. \*\*\* कि.ग्रा., रु. \*\*\* कि.ग्रा. तथा रु. \*\*\* किलो ग्राम था, जो वादी के उत्पादन की इक्वई लागत से नीचे का है। वादी के प्रतिकिलोग्राम बिक्री मूल्य 1995-96, 96-97 और 1997-98 § जून, 98 तक § में क्रमशः रु. \*\*\* रु. \*\*\*/किलो ग्राम, \*\*\* कि.ग्राम थे। यह देखा गया है कि इन मूल्य स्तरों पर, जबकि वादी ने 95-96 में और 96-97 में क्रमशः रु. 55.59 लाख और रु. 17.56 लाख के लाभ कमाए थे > इसने जाँच अवधि के दौरान रु. \*\*\*/कि.ग्रा की हानि उठाई। वादी द्वारा उठाई गयी हानियों का कारण निम्न क्षमता उपयोग, कम बिक्री तथा अधिक अंतिम स्टॉक थे। वर्ष 1997-98 के लिए लाख रुपयों में शुद्ध लाभ/§ हानि § रूपरुप § 1226.11 § था। यह देखा गया है कि जाँच अवधि के दौरान रु. \*\*\*/कि.ग्रा. के मूल्य पर वादी अपना उचित बिक्री मूल्य प्राप्त करने में असमर्थ रहा। यह कहा गया है कि अपनी बाजार हिस्सेदारी बनाए रखने के लिए वादी को अपनी सामग्री, आयोजित उत्पाद के लीडिड मूल्य से तुलनात्मक मूल्य पर बेचना पड़ी। प्रतिस्पर्धी मूल्य देने के कारण वादी को अपने उत्पाद काफी हानि पर बेचने पड़े।

### च. अनुसंधान एवं विकास के लिए अपर्याप्त निधि

---

21. रूसी सप्लायरों द्वारा पीटैपई के पाटन के माध्यम से डाले गए मूल्य दबाव के कारण वादी को आयोजित पीटैपई के लीडिड मूल्य से मेल मिलाना पड़ा और उसके कारण वह आधिशेष निधियाँ नहीं बना सका। जाँच अवधि के दौरान अनुसंधान एवं विकास तथा उपयोग विकास में और आगे निवेश के प्रयोजनों के लिए अपर्याप्त निधियों के पीछे यही मुख्य कारण था।

## ट. क्षति पर निष्कर्ष

22. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद यह देखा जा सकता है कि :-

क. विषयगत देशों से आयतों की मात्रा निरन्तर अर्थों में एवं भारत में उत्पादन एवं उपभोग के संबंध में अप्रतिबिम्बित रूप से बढ़ी है ;

ख. वादी की बाजार हिस्सेदारी में गिरावट आयी है जबकि आयतों की हिस्सेदारी बढ़ी है ;

ग. वादी का क्षमता उपयोग कम हुआ है ;

घ. वादी को अपने उचित बिक्री मूल्य से नीचे के मूल्यों पर बिक्री करनी पड़ी है जिससे हानि हुई है ;

ङ. आयतों ने स्वदेशी उद्योग के मूल्यों की अंडरकीटिंग की है,

च. स्वदेशी उद्योग के पास शक्ति और स्तक बच गया है ।

## ठ. कारणात्मक संबंध

23. प्राधिकारी का मानना है कि विषयगत देश से आयतों द्वारा स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है । रूस से आयतों की बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि के परिणामस्वरूप वादी की बाजार हिस्सेदारी में कमी आयी है और इससे स्वदेशी उद्योग के मूल्यों को कम करना पड़ा है । और जिससे स्वदेशी उद्योग को अपने उचित मूल्य से नीचे के मूल्य पर बिक्री करनी पड़ी है और स्वदेशी उद्योग इससे उबर नहीं सका है । अतः विषयगत देशों से पाटित आयतों के कारण स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है ।

## ड. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

24. आमतौर पर पाटनरेषी शुल्क लगाने का उद्देश्य उस पाटन को समाप्त करना है जो स्वदेशी उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है और भारतीय बाजार में सुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः बहाल करना है जो देश के आम हित में है ।



25. यह माना जाता है कि पाटनरेषी सीमाशुल्क लगाने से सम्बद्ध सामान के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के मूल्य स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप निर्यात बाजार में उनके उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्द्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है । किन्तु पाटनरेषी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा कम नहीं होगी, विशेषकर तब, जबकि पाटनरेषी शुल्क की लेवी उस शिथिल तक ही सीमित कर दी जाए जो स्वदेशी उद्योग को हुई क्षति को कम करने के लिए आवश्यक है । इसके विपरीत पाटनरेषी उपाय लागू किये जाने से पाटन बंद प्राप्त होने वाले अनुचित लाभ रोक जा सकेंगे, स्वदेशी उद्योग के ह्रास को रोक जा सकेगा और एकलिक फाइबर के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध हो सकेंगे। पाटनरेषी उपायों से विषयगत देशों से आयात किसी भी प्रकार से कम नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं को होने वाली उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा ।

26. प्राधिकारी ने स्वदेशी उद्योग के लिए उत्पादन की अधिकतम लागत पर विचार करके स्वदेशी उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक पाटनरेषी सीमाशुल्क की मात्रा का पता लगाने हेतु भारत में स्वदेशी उद्योग के लिए पिटेरफई की उचित बिक्री मूल्य पर विश्वास किया है ।

#### ढ. लैंडिंग मूल्य

27. आयातों के लैंडिंग मूल्य का निर्धारण पिटेरफई के निर्यात मूल्य के आधार पर किया गया है । यह सीमाशुल्क के वर्तमान स्तर तथा एक प्रतिशत लैंडिंग और दो प्रतिशत हैडलिंग सब्सिडी को जोड़कर पाटन से संबंधित उपरेक्त पैरे में दिए गए विवरण के आधार पर निर्धारित किया गया है ।

#### छ. निष्कर्ष

28. उपरेक्त पर विचार करने के बाद यह देखा जाता है कि :-

॥क॥ रूसी मूल के या वहां से निर्यातित पिटेरफई, भारत को उसके सामान्य मूल्य से कम पर निर्यात किया गया जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है;

॥ख॥ स्वदेशी उद्योग को क्षति हुई है;

॥ग॥ विषयगत देशों से होने वाले आयातों के कारण क्षति हुई है;

29. यह विचार किया गया कि क्या पाटनमार्जिन से कम सीमाशुल्क लगाना क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा । इस उद्देश्य के लिए निर्यातकों के लैंडिंग मूल्य की तुलना, स्वदेशी उद्योग के उचित बिक्री मूल्य से की गयी जो जाँच अवधि के लिए निर्धारित की गयी थी । जहां यह अंतर पाटनमार्जिन से भी कम था, वहां पाटनमार्जिन से कम सीमाशुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है । तदनुसार यह प्रस्तावित है कि इस संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा जारी की गयी अधिसूचना की तारीख से रूसी मूल के या वहां से निर्यात

किये जाने वाले, सीमाशुल्क टेरिफ के सीमाशुल्क उप-शीर्ष 3904-61 के अन्तर्गत आने वाले पीटैपर्स के सभी ग्रेड्स पर, अंतिम निर्धारण होने तक, अन्तिम पाटनबेची सीमाशुल्क लगाया जाए ।

देश	उत्पादक का नाम	राशि
1.	2.	₹ ३.००.००
रुस	जेएससी हेलाजिन तथा अन्य सभी उत्पादक/निर्यातक	रु. 2990

30. इस प्रयोजन के लिए आयतों का लैंडिङ मूल्य, सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अन्तर्गत सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथानिर्धारित, निर्धारण योग्य मूल्य होगा और इसमें सीमाशुल्क टेरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3 ए, 8बी, 9 तथा 9ए के तहत लगने वाले सीमाशुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे ।

#### त. आगे की क्रियाविधि

31. प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित क्रियाविधि अपनाई जाएगी:-

क. प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों से इन निष्कर्षों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेगा और अंतिम निष्कर्षों में उन पर विचार किया जाएगा;

ख. सम्बद्ध ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता और अन्य हितबद्ध पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है जो, इस पत्र के जारी होने की तिथि से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं । कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन जांचों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार रख सकती है ।

ग. प्राधिकारी मौखिक अभिवेदन के लिए सभी हितबद्ध पार्टियों को मौका देगा ।

घ. प्राधिकारी अंतिम निष्कर्षों को घोषणा करने से पूर्व आवश्यक तथ्यों को उजागर करेगा ।

रति विनय झा, नामनिर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE****NOTIFICATION**

New Delhi, the 9th June, 1999

**Subject:—**Anti-Dumping investigations concerning imports of Polytetrafluoroethylene (PTFE) from Russia—Preliminary Findings.

24/1/98/DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury ), Rules 1995, thereof:

**A. PROCEDURE:**

1. The procedure given below has been followed with regard to the investigations:
  - i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Hindustan Fluorocarbons Ltd., Hyderabad, alleging dumping of Polytetrafluoroethylene (PTFE) originating in or exported from Russia.
  - ii) The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was thereafter considered as properly documented.
  - iii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner decided to initiate investigations against alleged dumped imports of PTFE originating in or exported from Russia. The

Authority notified the Embassy of the subject country about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate investigations in accordance with sub-rule 5(5) of the Rules.

- iv) The Authority issued a Public Notice dated 22<sup>nd</sup> January, 1999, published in the Gazette of India Extraordinary initiating anti-dumping investigations concerning imports of PTFE classified under heading no. 3904.61, Chapter 39 of the Customs Tariff Act, 1975, originating in or exported from Russia.
- v) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known exporter (whose details were made available by the petitioner and by the Embassy of India in Russia) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter.
- vi) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known importers (whose details were made available by the petitioner) of PTFE and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter.
- vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of PTFE.
- viii) The Authority provided copies of the Petition to the known exporters and the Embassy of the subject country in accordance with Rule 6(3) supra.
- ix) The Authority sent a questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporter in Russia, in accordance with Rule 6(4);
  - M/s Halogen Joint Stock Company,

UI, Lasvinskaya, 98  
Perm  
Russian Federation 614113.

The exporter did not respond to the questionnaire in the prescribed format. However they have addressed a letter to the Authority dated 1<sup>st</sup> April, 1999, in which they have expressed their unwillingness to participate in the present investigation.

- x) The Embassy of the Russian Federation was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporter was also sent to them, alongwith the name and address of the exporter.
- xi) A questionnaire was sent to the following known importers of PTFE in calling for necessary information in accordance with Rule 6(4);
- M/s. U.Goenka & Sons Ltd.,  
Mumbai
  - M/s. Pragati International  
New-Delhi
  - M/s. Venus Insulations  
New-Delhi
  - M/s Mechanical Packing Industries Ltd.,  
Mumbai
  - M/s Mach Polymers  
Pune

- M/s. TFE Coating Industries  
Ahmedabad
- M/s Pragati Plastics Pvt Ltd.,  
New-Delhi
- Automat Industries  
Ahmedabad
- M/s. Dip-Flon Engineering Co.  
Ahmedabad
- Plastics Products Engineering Co  
Narol
- M/s Corrosion Engineers  
Ahmedabad

Responses were filed by the following:

- Automat Industries
- Mach Polymers
- Dip-Flon Engineering & Co.
- Plastic Products Engineering Company
- A response dated 31<sup>st</sup> March, 1999, was received from Garg Associates Pvt. Ltd., who claim to be pioneer manufacturers of PTFE insulated wires and cables (PIWC) in India since 1966.

- **Mechanical Packing Industries Ltd.**
- xii) The Authority made available the non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xiii) Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- xiv) \*\*\* In this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xv) The Authority conducted spot verification at the premises of the petitioner.
- xvi) Investigations were carried out for the period starting from 1<sup>st</sup> April 1997 to 30<sup>th</sup> June 1998 (15 months).

## **B. PETITIONERS VIEWS**

2. The petitioner has raised the following major issues in their petition and in their subsequent submissions:
  - i) PTFE is an engineering polymer with unique properties and there is no substitute to this material. It is broadly classified as granular powder (granular grade or suspension grade) and aqueous dispersion (or emulsion grade). The main raw materials required

for manufacture of PTFE are AHF and chloroform. No part of the inputs required for the manufacture of PTFE is imported.

- ii) PTFE is produced commercially via the same route, world over, namely :-

\*\*\*

It is stated that there is no process other than the above through which PTFE can be produced.

- iii) M/s HFL, is the manufacturer of various grades of PTFE. These are as specified below:
- (a) Suspension grades- H51A, H71, H81G, H5PS.
  - (b) Emulsion grades- H620, H630, H603/1, H603/2, H603/3
  - (c) Filled grades- are combinations of Carbon, Glass, Bronze, Graphite and Molybdenum disulphite.
- iv) Russian F4 material can be compared with the petitioners grades of H51A and H71A (both under the category of suspension grade). F4, H51A and H71A are used for the same applications and follow the same process of manufacture. However, the elongation range and tensile strength value of the Russian material is inferior to that of the product manufactured by the petitioner. Pollution levels are higher in the Russian grade than that in HFL grades.
- v) The production of suspension and emulsion PTFE (granular and aqueous solution grades) by HFL is in the ration of 80:20, which meets the total quantitative requirement of the country.
- vi) The technology adopted by HFL has been acquired from one of the world leaders in the field, namely, M/s Atochem, France. This is a guarded technology and available only to 6 multinationals in the world.
- vii) The polymerisation technology followed by world leaders is “free radical polymerisation” This technology adopted by M/s HFL,



provides best results derived out of years of research and development. The technology followed by the Russians is believed to be simple addition polymerisation which does not make the ultimate product comparable to free radical polymerisation product in terms of quality on account of insufficient technology used in Russia.

- viii) The quality of the material is extremely important for producing high quality performance components, wires, cables, coatings etc. If the raw material is of inferior grade, the corresponding components will fail in their respective applications. Alternative materials would then be developed leaving the real advantages of PTFE aside.
- ix) The quality of Russian material is far inferior. Hence the markets which were developed by the petitioner are steadily being lost to alternative materials.
- x) HFL started commercial production in 1988 when the demand of PTFE was only 150 MT as against a plant capacity of 500 TPA. HFL has invested considerably to increase application usage of PTFE in India. While these efforts were showing results, dumping of Russian material in the country during the last three years adversely affected the performance of HFL.
- xi) Russia, through trade channels or direct, supplies only granular powder grades and not emulsion/aqueous solution grades.
- xii) The quality of Russian material is inferior to the grades of PTFE manufactured by HFL due to inadequate technology followed by them as well as inefficiency in their specific consumption of raw materials. Hence their processing inefficiencies are reflected in their higher cost of production. However, they continuously sell at desperate prices, which completely upsets the stability of the market.

- xiii) There has been drastic increase in imports of PTFE. HFL has been losing its market share at a fast pace and has been compelled to sell its material comparable to landed price of imported resin. By offering competitive prices, HFL has had to sell its resin at considerable loss.
- xiv) The capacity utilization of HFL has been dropping on account of drop in sales.
- xv) The terms of supplies to HFL customers is on ex-works basis. All the handling costs (technical services are borne by the customer.
- xvi) The packing of HFL material is in Fibre drums with LDP double lined liners.
- xvii) M/s. HFL, Hyderabad, is the only manufacturer of this resin in India. HFL has the smallest plant capacity in the world having to compete with giants like Dupont, UAS/Japan, and VAO Techmashexport, Moscow, whose individual plant capacities are 10,000 MT per annum.
- xviii) The quantum of investment made by the petitioner in application development and customer service is Rs 10 crores. It is to the credit of the petitioner that a PTFE market of 300MT/annum in 1991 has been enlarged by their marketing and application development efforts to the present market demand of 800MT. This has been the main reason for suppliers outside India to supply their material on Indian soil and take away the market from the petitioner.
- xix) New areas of application of PTFE developed by the petitioner include the following:
  - (a) indigenisation of PTFE nozzle heads for high voltage circuit brakes;
  - (b) development of green PTFE strips for irrigation purposes;
  - (c) development of PTFE clad rubber diaphragms for pumping of corrosive liquids;
  - (d) components for missiles;
  - (e) development of PTFE pump;
  - (f) development of PTFE insulation for batteries;
  - (g) development of PTFE etched tapes.

(xx) Due to the price pressure exerted through the dumping of PTFE by Russian suppliers, the petitioner was compelled to match the landed price of imported PTFE and was therefore unable to generate surplus funds for purposes of further investment in R&D and application development after the period of investigation.

### **C. VIEWS OF IMPORTERS, EXPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES**

#### **3. Importers views**

##### **(a) Automat Industries**

- i) As manufacturers of PTFE teflon items, supplies are made to buyers such as ISRO, HAL, BARC, NTPC, ONGC, BHEL and defence organisations who take delivery of quality products only. In order to ensure the quality of the product, the raw material has to be pure. The raw material, viz., PTFE was purchased from the petitioner and this continued for 12 years. However, due to the inferior quality of their product, they turned to imports from Russia, which was not only satisfactory in terms of quality but also priced cheaper.
- ii) Quality problems with buyers did not recur since the usage of imported raw material which have timely delivery schedules.
- iii) The petitioner who is the only manufacturer of PTFE, supplies inferior quality material at higher price. If anti-dumping duty is imposed, the companies that supply quality finished products using imported PTFE, would suffer.

**(b) M/s. Mach Polymers**

They have not imported PTFE originating in or exported from Russia during the period of investigation or at any other time.

**(c) Garg Associates Pvt. Ltd.**

- (i) Two of the group companies, Garg Associates Pvt. Ltd., and Dhruv Electronics Pvt. Ltd., are involved in the design and manufacture of PIWC ( PTFE insulated wires and cables) and PTFE sleeves/tubing's, and procure large quantities of fine-powder PTFE resin mostly from Japan.
- (ii) Garg Associates Pvt. Ltd., is perhaps the only exporter from India of PIWC to the developed markets of West Europe, UK, Canada, and New-Zealand at high value-addition. Dhruv Electronics Pvt. Ltd., is serving the domestic market, mainly in the area of defence electronics and aero-space besides professional industrial requirements in India.
- (iii) PTFE is a versatile plastic with varied uses, the most common being in the area of moulding and lining, from the point of view of bulk. PTFE is used by forming the fine powder resin into very thin tape, wrapping the tape around silver or nickel-plated-copper conductors and fusing it at high temperature to make a wire. A similar process is used for making sleeves or tubing's.
- (iv) Since the kinds of PTFE used for different applications vary widely in price, investigation for dumping should also take into consideration the different grades.
- (v) The motives of the petitioner are suspect. The pricing of their products have never been based on professional considerations related to cost of production. Nor is the quality of PTFE or its

consistency of any major concern to them. The prices have often been arbitrarily increased by HFL in the past, based on the landed cost of imported PTFE by taking into account the prevailing import duty structure and the dollar exchange rate.

- (vi) This respondent had to raise a demand for compensation for poor quality of PTFE supplied by the petitioner. When their efforts to upgrade HFL quality did not produce satisfactory results, further purchases from the petitioner were stopped from July 1995.
- (vii) The respondent is now dependent exclusively on imported material.
- (viii) The Russian manufacturer need not be penalised for low production costs, even while M/s. HFL do not have any incentive to reduce cost of operations.

**(d) Dip-Flon Engineering & Co.**

- (i) This respondent has stated that they have not imported PTFE originating from Russia during the period of investigation.
- (ii) As a processor of PTFE they would like free play of competition between imported PTFE resin and that manufactured by HFL.
- (iii) They had to resort to imports as the quality of resin supplied by HFL was unsuitable for various processes and the petitioner was unable to meet their requirements on time.
- (iv) It is felt that in view of globalisation and resultant competitive pricing and the availability of a wide variety of options for consumers, it would be counter productive to impose anti-dumping duties or restrict the imports of the product under investigation.

**(e) Plastic Products Engineering Company**

- (i) This respondent has not imported PTFE from M/s Halogen Joint Stock Company during the period investigated
- (ii) From the point of view of the consumer, M/s HFL being the sole manufacturer of PTFE should not be allowed to attain the status of a monopoly through the acceptance of their contention and by imposition of anti-dumping duties.
- (iii) The petitioner does not produce all grades of PTFE and hence any measure to restrict imports would be counterproductive.

**(f) Mechanical Packing Industries Ltd.**

- (i) Free import of PTFE has been allowed by the Government in the interest of indigenous consumers giving due weightage to various aspects like quality, availability and fitness for end-use. The petitioner is not in a position to offer the various grades of PTFE resin available in the international market to meet specific application areas/end-users requirements. Although most of the requirements are sourced from M/s HFL, it is often found that there is a lack of consistency in the quality of resin supplied by them.
- (ii) This respondent caters to the requirements of the domestic industry as well as to the export market. For the purpose of exports, consistency in quality is essential, leading thereby to imports of PTFE resin.
- (iii) The landed cost of imports of PTFE resin from different sources has generally been more expensive than the cost of purchase from M/s HFL Ltd. It is reiterated that such expensive imports are essential, keeping in view the quality factor for the export market as well as the end-use application.

- (iv) There is no large scale dumping of Russian PTFE into the Indian market and therefore there is no case for the levy of anti-dumping duty on PTFE resin. Levy of anti-dumping duty may lead to an adverse impact on the foreign exchange inflow by reducing exports due to non-competitive price and unacceptable quality.

#### **4. Exporters Views**

##### **Halogen Joint Stock Company**

This exporter has not responded to the Authority's request for information as per the prescribed questionnaire and within the time limit allowed. However vide their letter to the Authority dated 1/4/99 they have raised the following points:

- (i) The arguments of the petitioner are incorrect and groundless.
- (ii) The petitioner has erroneously concluded that normal value of PTFE in Russia is much higher than the export price to India.
- (iii) The statement of the petitioner that Russian producers charge salaries, wages and commercial interest to the "state" is absolutely groundless as is their statement that the number of personnel in Russian enterprises is "less than half" as compared with that of India.
- (iv) That JSC Halogen is a major manufacturer of PTFE in Russia is not factually correct. They have made irregular and insignificant quantities of deliveries to India.
- (v) It is unnecessary for HFL to compete with VAO Techmasheexport (Moscow) as the latter is a trading organization, which has never manufactured PTFE.

- (vi) For comparison of prices, the petitioner has chosen the biggest producers of PTFE such as Dupont (USA) and Daikin (Japan) but these producers additionally include the cost of technical service (handling costs) to the price of PTFE resin.
- (vii) The prices of PTFE may differ significantly depending on the technology used for production and on post-treatment or further processing. For comparison of prices, references made to moulding PTFE powder of Dupont (USA) and Fluoroplast-4PN (Russia) are not in order because these grades of PTFE differ on account of particle size. They have different applications on further processing and consequently have different prices.
- (viii) The price of PTFE depends also on the type of packaging used. The moulding powder of Dupont is packed in metal cardboard or polystyrene drums, while Fluoroplast-4PN (JSC Halogen) is packed in paper sacks.
- (ix) In view of the reasons cited above and on getting acquainted with the documents presented, this exporter did not find it necessary to participate in the present investigation.

#### **D. EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED**

- 5. The submissions made by the petitioner and importers have been examined and dealt with at appropriate places hereunder.

#### **E. PRODUCT UNDER INVESTIGATION**

- 6. The product under consideration in the present investigation is Poly tetra fluoro ethylene (PTFE) in suspension and emulsion grades.



PTFE is an engineering thermoplastic with outstanding properties such as chemical inertness, low co-efficient of friction, heat resistance, excellent electrical insulation properties, non-toxic, non-inflammable and weathering resistance. Due to these characteristics PTFE finds many applications in chemical, mechanical, electrical and electronics industries.

PTFE has varied uses the most common being in the areas of moulding and lining. In the mechanical industry, PTFE is used in the manufacture of bearings, compression rings, slide-blocks ( to take up expansion in large metallic constructions, e.g., bridges, pipelines, heat exchangers, horizontal reservoirs, etc.), stuffing boxes on rotating or alternating shafts of pumps, compressors, autoclaves valves, etc. PTFE is also used in the manufacture of unsintered tape and in the printing and textile trade for coating of rollers to make the surfaces anti-stick.

In the electrical industry, wire PTFE sleeved by extrusion and tape wound cables are being used in precision industries. More general use is being made of PTFE in aviation, electronic computers radar etc. It is very generally used in making connection components co-axial plugs, supports for electronic tubes and aerials, cross-bars for high tension conductors, insulation components etc.

Seals and joints are now one of the most popular fields of application of PTFE in the chemical industry. Apart from this PTFE is equally effective for pipe-lines, valves, pumps etc.

PTFE is classified under Chapter 39 of the Customs Tariff Act, 1975, under tariff classification H.S. Code No. 3904.61. The classification is however indicative only and in no way binding upon the scope of the present investigations.

## **F. LIKE ARTICLES**

7. PTFE is produced and sold in different grades. There is however no significant difference in terms of process, equipment or technology for the production of different grades of PTFE which is manufactured via the same chemical route the world over. For obtaining different grades of PTFE, different kinds of finishing operations are employed which are mostly in batches. Therefore, PTFE manufactured by the domestic industry and in the country subject to this investigation are alike in their essential physical and technical characteristics.

In order to establish that PTFE produced by the domestic industry is a like article to that exported from Russia, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered. Some interested parties have stressed on the quality differences between the imported PTFE and that manufactured by the petitioner. However, the basic manufacturing process, applications and overall use of the product are similar. There is a high degree of interchangeability and consequently of competition between the imported product and that manufactured by the petitioner being the subject matter of this investigation.

There is no argument disputing that PTFE produced by the domestic industry in various grades has characteristics closely resembling the imported material and is substitutable by PTFE imported from the subject country both commercially and technically. PTFE produced by the domestic industry has been treated as like article to the product exported from Russia, within the meaning of Rule 2(d).

## **G. DOMESTIC INDUSTRY**

8. The petition has been filed by M/s. Hindustan Fluorocarbons Ltd., Hyderabad, who is the only manufacturer of this product in India. The Ministry of Chemicals and Fertilisers has also confirmed the single-producer status of the petitioner. The petitioner therefore constitutes

domestic industry and has the required standing to file the present petition under the Rules.

## **H. DUMPING**

9. Under Section 9A(1), normal value in relation to an article means:

The comparable price in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

- (i) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:
  - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
  - (b) the cost of production of the said article in the country of origin alongwith reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

10. The Authority sent a questionnaire to the known exporter from the subject country in terms of the section cited above. However, the exporter did not respond to the request for information as per the questionnaire but raised some issues in a letter addressed to the Authority dated 1/4/99. They also expressed their unwillingness to participate in this investigation. Therefore there are no claims made by the exporter with regard to normal value and export price. The Authority has therefore been constrained to rely upon constructed price and best available information with regard to normal value and export price respectively, as provided by the petitioner and as available in official statistics.

## **I. EXAMINATION OF NORMAL VALUE AND EXPORT PRICE BASED ON CONSTRUCTED VALUE AND AVAILABLE INFORMATION BY THE AUTHORITY**

11. The Authority observes that the various grades of PTFE do not display any significant difference in terms of costs and are in the same range. It is stated by the petitioner that since the granular grade involves drying and energy required for drying, the cost of this additional energy is more or less equal to the additional additives cost for the aqueous solution emulsion grades. Hence the differential cost of production between granular and emulsion grades is marginal and can be treated as similar. The Authority has therefore grouped all grades described as product under consideration, for this investigation.

### **(i) NORMAL VALUE**

12. The Authority observes that the exporter from Russia has not responded to the questionnaire in the prescribed format and has not furnished information relating to normal value, export price, and dumping margin. In a letter to the Authority received beyond the

specified time-limit, they have raised some general issues and termed the petitioners views on normal value in Russia as groundless and incorrect. It is observed by the Authority that they have not attempted to substantiate their own arguments by responding to the questionnaire. Instead, they have expressed their unwillingness to participate in this investigation. The Authority therefore considers the exporter to be non-cooperative and has proceeded on best available information.

The petitioner has claimed the constructed cost of production in Russia based on data collection and interaction with industries in the US and other international manufacturers. While the exporter has contested this data, stating that it is only an approximation, they have not given any evidence of their normal value. In the circumstances the Authority has been constrained to determine the constructed cost based on the available information.

The normal value in Russia is therefore considered to be USD \*\*\*/kg or Rs \*\*\*/kg at an average exchange rate of 1USD=Rs 39.42/.

## **(ii) Export Price**

13. The export price has been determined from DGCIS data after taking 1% as ocean freight, 0.29% as insurance charges and 0.5% as packing costs. After adjustments on these accounts the fob export price is Rs \*\*\*/kg or USD \*\*\*/kg.

## **(iii) Dumping margin**

14. Considering the normal value at USD \*\*\*/kg and the ex-works export price at USD \*\*\*/kg, the dumping margin determined by the Authority comes to USD \*\*\*/kg (which is 4.82% of export price).

## **J. INJURY**

15. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article..." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

Annexure II(iii) under Rule 11 supra further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as a percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three per cent, the imports cumulatively account for more than seven per cent of the imports of the like article, and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from the subject country are more than the limits prescribed above.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, quantum of sales, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and

margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules supra.

### (a) Quantum of Imports

16. The total imports of PTFE were 3,34,920 KG, 3,44,184 KG, and 4,75,528 KG during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (till June, 1998). Thus the increase was 2.76% in 1996-97 over 1995-96 and 38% in 1997-98 (till June, 1998) over 1996-97. The increase was 41.9% in 1997-98 over 1995-96. Thus the quantum of imports have gone up significantly during the period of investigation.

The quantum of imports from Russia was 24,130 KG, 7,000 Kg and 40,665 KG during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (till June, 1998). The quantum of imports have gone up by 68% in 1997-98 over 1995-96 and by 480% in 1997-98 over 1996-97. There was however a decline in imports in 1996-97 over that of 1995-96.

The quantum of imports from other countries was 3,10,790 KG, 3,37,184 KG and 4,34,863 KG during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (till June, 1998) respectively. The share of Russia in total imports was 7.76%, 2.07% and 9.35% in 1995-96, 1996-97 and 1997-98, respectively.

### (b) Production and Capacity Utilisation

17. The production capacity, actual production and capacity utilisation of the petitioner was as follows: -

Year	Capacity (MT)	Production (MT)	Capacity Utilisation
1995-96	500	385	77
1996-97	500	392	78

1997-98	500	259	52
POI	625	333	53.28

The capacity utilisation of M/s HFL was 77%, 78% and 52% in 1995-96, 1996-97 and 1997-98 respectively and 53.28 in the period investigated. Thus the capacity utilisation declined steeply during the period of investigation from a level of 78% in the previous year. Decline in capacity utilisation has been attributed to drop in sales. There has been no change in installed capacity, which remains at the same level.

### **(c) Sales and Market Share**

18. It is observed that the demand for PTFE was 746 MT, 705 MT and 797 MT in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. The share of imports in total demand was 44.7%, 48.7% and 59.5% in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. The share of the petitioner was 55.2%, 51.2% and 40% in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. Thus the share of imports have been rising in total demand whereas the share of Indian industry has been declining. The quantum of sales made by the petitioner declined from 412Mt in 1995-96, to 361 Mt in 1996-97 to 321.88 during the period of investigation (April'97 to June'98). The selling prices in Rs per kg were \*\*\*, \*\*\*, and \*\*\* in 95-96, 96-97 and 97-98. The sale of PTFE below cost of production during the period of investigation resulted in heavy loss of profit to the petitioner.

### **(d) Closing Stocks**

19. It is observed that the closing stocks of the petitioner were 54 MT, 85 MT and 69 MT during 95-96, 96-97 and 97-98. Closing stocks went up by 36% in 96-97 over 95-96 and by 21% in 97-98 over that of 95-96. The quantum of closing stocks declined in the period investigated over that of the previous year but nevertheless remained high.



**(e) Price undercutting and price depression**

20. The petitioner has stated that imports from the subject country have been undercutting the prices of the like article being sold by the domestic producer. It is seen from official statistics that Russian PTFE was priced at Rs \*\*\*/kg (fob) or USD \*\*\* after adjustments on account of freight, insurance and packing charges. This is less than the constructed cost of production in Russia, which is estimated at Rs \*\*\*/kg or USD \*\*\*/kg. This price is below the unit cost of production of the petitioner during 1995-96, 1996-97 and for the period of investigation which was at Rs \*\*\*/kg, Rs \*\*\*/kg and Rs \*\*\*/kg respectively. The petitioners unit selling prices/kg during 1995-96, 1996-97 and 1997-98(till June'98) were Rs. \*\*\*, Rs \*\*\*/kg and Rs \*\*\*/kg. It is seen that at these price levels, while the petitioner had earned profits of Rs 55.59 lacs and Rs 17.56 lacs during 1995-96 and 1996-97 respectively, it incurred losses amounting to Rs (\*\*\*)/kg during the period of investigation. Losses suffered by the petitioner were on account of low capacity utilisation, poor sales and high closing stocks. The net profit/(loss) for 1997-98 in Rs in lacs was Rs. (1226.11). It is seen that at a price of Rs \*\*\*/kg during the period of investigation, the petitioner was unable to recover its fair selling price. It is stated that in order to maintain its market share, the petitioner has been compelled to sell its material comparable with the landed price of the imported product. By offering competitive prices, the petitioner had to sell its product at considerable loss.

**(f) Insufficient funds for investment in R&D**

21. Due to the price pressure exerted through the dumping of PTFE by Russian suppliers, the petitioner was compelled to match the landed price of imported PTFE and was therefore unable to generate surplus funds. This was the main reason behind insufficient funds for purposes of further investment in R&D and application development after the period of investigation.

## **K. CONCLUSION ON INJURY**

22. In view of the foregoing it is observed that:-

- (a) the quantum of imports from the subject country have increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India;
- (b) the market share of the petitioner has gone down while that of imports has increased;
- (c) the capacity utilisation of the petitioner has gone down ;
- (d) the petitioner has been forced to sell at prices below its fair selling price resulting in losses;
- (e) imports are undercutting the prices of the domestic industry;
- (f) the domestic industry is left with substantial closing stocks.

## **L. CAUSAL LINK**

23. The Authority holds that the material injury to the domestic industry has been caused by imports from the subject country. The increase in the market share of imports from Russia resulted in the decline in the market share of the petitioner and undercut the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell below its fair price which resultantly, the domestic industry was unable to recover. The material injury to the domestic industry was therefore caused by the dumped imports from the subject country.

## **M. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES**

24. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

25. It is recognised that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject

goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of acrylic fibre. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore would not affect the availability of the product to the consumers.

26. To ascertain the extent of anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling price of PTFE in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

## **N . LANDED VALUE**

27. The landed value of imports is determined on the basis of export price of PTFE, determined as detailed above in the para relating to dumping, after adding the prevailing level of customs duties and one per cent landing and two per cent handling charges.

## **O. CONCLUSIONS**

28. It is seen after considering the foregoing that:

- (a) PTFE described under para 6 originating in or exported from Russia has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- (b) the domestic industry has suffered injury;
- (c) injury has been caused by imports from the subject country.

29. It is considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury. Landed price of the imports for the

purpose, was compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigation. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, it is proposed that provisional anti-dumping duties be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all grades of PTFE originating in or exported from Russia falling under customs sub-heading 3904.61 of the Customs Tariff Act, pending final determination.

Country	Name of the Producer	Amount
1.	2.	3. (Rs)/MT
Russia	JSC Halogen & all other producers/exporters	Rs 2990

30. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

## P. FURTHER PROCEDURE

31. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:
- The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
  - Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days of the despatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.
  - The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions.
  - The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority